मैन्युअल

डेयरी

sidbi

ANANYA
Finance For Inclusive Growth Pvt. Ltd.

यह प्रशिक्षण मॉड्युल उन महिलाओं के प्रशिक्षण के लिए है जिन्होंने 'दूध उत्पादन और बिक्री' का लघु व्यवसाय शुरू करने और चलाने का निर्णय किया है। इस पुस्तिका में सात दिन तक और प्रतिदिन पाँच घंटे के प्रशिक्षण कार्यक्रम की योजना दी गई है। मगर, स्थानिय परिस्थिति के मांग पर इसे आवश्यकता अनुसार समायोजित किया जा सकता है।

परिचय

भारत के ग्रामीण इलाकों में पशु–पालन लोगों के जीविकोपार्जन का एक महत्वपूर्ण साधन है। ग्रामीण इलाकों का लगभग 70 प्रतिशत से अधिक पशु–धन छोटे या सीमांत किसानों तथा भूमिहीन मजदूरों के पास है। गाय और भैंस पालन और दूध के उत्पादन का ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए रोजगार की अपार संभावना मौजूद है। दूध उत्पादन और डेयरी फार्मों के काम में 70 प्रतिशत से अधिक कामगार महिलाएँ हैं।

बधाई! आपने 'दूध उत्पादन' का व्यवसाय शुरू करने का निर्णय किया है। इस प्रशिक्षण के दौरान आप इस व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं जैसे की – गाय या भैंस खरीदने से लेकर उनके देखरेख तथा अपने मुनाफे के हिसाब–किताब रखने तक के बारे में जानेंगे।

प्रशिक्षण के मुख्य उद्देश्य

- प्रतिभागियों को दूध उत्पादन के व्यवसाय से जुड़े विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तृत जानकरी प्रदान करना
- गाय तथा भैंस की उचित देख–रेख के बारे में जानकारी देना ताकि दूध का उत्पादन बढ़ाया जा सके
- छोटे डेयरी फार्मों से संबंधित सरकारी याजनाओं और पशु–धन बीमा योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करना
- महिला उद्यमियों को इस व्यवसाय से संभावित मुनाफे के बारे में जानकारी प्रदान करना

प्रशिक्षण की रूपरेखा

सत्र	विस्तृत विषय–वस्तु	समय	विधि
	दिन 1		
सत्र 1	– प्रतिभागियों का स्वागत – एक–दूसरे को जानना – सात–दिवसीय प्रशिक्षण की योजना के बारे में बताना – प्रशिक्षण के उद्देश्य साझा करना	1 घंटा	– समझाना – चर्चा करना
सत्र 2	– 'दूध उत्पादन' का एक लघु व्यवसाय शुरू करने के चरण	1 घंटा	– समझाना – गतिविधिः यह चित्र क्या कहता है

सत्र 3	– गाय या भैंस के लिए छप्पर बनाना	1 घंटा	– चर्चा एवं समझाना – मेरी गाय का छप्पर कैसा होगा
सत्र 4	– अच्छी नस्ल की गाय या भैंस खरीदना – छोटे पैमाने पर डेयरी आउटलेट और मवेशियों के बीमा से संबंधित सरकारी योजनाएंरू	2 घंटे	– समझाना – गतिविधि : मैं कौनसी गाय/भैंस खरीदूं
दिन 2			
सत्र 5	– पहले दिन के सत्र का दोहरान – पशु की देखभाल भोजन और पानी प्रजनन	2 घंटे	– चर्चा –समझाना – जोड़े में फील्ड में जाना
सत्र 6	– पशु की देखभाल आम विमारीयां एवं रोकथाम दूध उत्पादन में स्वच्छता	1 घंटे	–समझाना – चर्चा
सत्र 7	–पशु का देखभाल बछड़ा का देखभाल	1 घंटा	–समझाना – चर्चा
सत्र 8	– क्षेत्र भ्रमण की तैयारी	1 घंटा	– चर्चा – जोड़े में काम करना
दिन 3			
सत्र 9	– एक दूध उत्पादन करने वाले से मिलना और बातचीत करना – दिन भर के काम का निष्कर्ष	5 घंटे	– जोड़े में फील्ड में जाना –चर्चा –व्यक्तिगत कार्य
दिन 4			
सत्र 10	– एक दूध उत्पादन करने वाले से मिलना और गाय या भैंस के छप्पर बनाने और उसका रखरखाव करने के बारे में बात करना – दिन भर के काम का निष्कर्ष	5 घंटे	– जोड़े में फील्ड में जाना –चर्चा –व्यक्तिगत कार्य
दिन 5			
सत्र 11	– बाजार को जानना – दूध एवं दूध उत्पादों का मांग के बारे में जानना – स्थानिय दुकानदारों से मिलकर दूध के विक्रय दाम पता करना – दिन भर के काम का निष्कर्ष	5 घंटे	– जोड़े में फील्ड में जाना –चर्चा –व्यक्तिगत कार्य – गतिविधिः मेरे दूध उत्पाद का खरीदार कौन

दिन 6			
सत्र 12	– गांवों का दौरा करना और अच्छी गुणवत्ता वाली नस्ल की दूधारू गाय या भैंस की खोज करना – दिन भर के काम का निष्कर्ष	5 घंटे	– जोड़े में फील्ड में जाना –चर्चा –व्यक्तिगत कार्य
दिन 7			
सत्र 13	– फील्ड में जाने के अनुभव को साझा करना	1 घंटे	– प्रस्तुती
सत्र 14	– दूध और दूध उत्पादों का मूल्य निर्धारित एवं गुणवत्ता नियंत्रण करना – डेयरी में जोखिम कारक और इससे कैसे निपटें?	1 घंटा	– समझाना – चर्चा
सत्र 15	– डेयरी व्यवसाय के लिए रिकॉर्ड रखने और बजट बनाने का महत्व – बजट बनाना – बजट प्रस्तुत करना	1.5 घंटे	– समझाना – व्यक्तिगत कार्य – प्रस्तुति
सत्र 16	– व्यवसाय योजना बनाना	1 घंटा	– समझाना – व्यक्तिगत कार्य – प्रस्तुति
सत्र 17	– सात दिन के प्रशिक्षण का समापन	0.5 घंटा	– चर्चा

दिन 1

सत्र 1

प्रतिभागियों का स्वागत

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों का स्वागत कर उनका प्रशिक्षण के लिए पंजीकरण करेंगे।

एक–दूसरे को जानना

- प्रतिभागी अपना–अपना नाम बता कर परिचय देंगे
- प्रतिभागी यह भी बताएंगे कि उन्होंने 'दूध उत्पादन और बिक्री' के व्यवसाय को अपने लघु व्यवसाय के रूप में क्यों चुना
- अन्य प्रतिभागी उनसे सवाल–जवाब कर सकते हैं

सात दिन के प्रशिक्षण के बारे में बताना

- प्रशिक्षक सात दिन के प्रशिक्षण के बारे में जानकारी प्रतिभागियों के साथ साझा करेंगे

प्रशिक्षण के उद्देश्य साझा करना

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण के उद्देश्य साझा करेंगे

सत्र 2

'दूध उत्पादन' का एक लघु व्यवसाय शुरू करने के चरण

- प्रशिक्षक 'दूध उत्पादन और बिक्री' के व्यवसाय को शुरू करने के बारे में सभी चरणों के बारे में प्रतिभागियों को समझाएंगे

गतिविधिः यह तस्वीर क्या कहती है?

इस गतिविधि का उद्देश्य 'दूध उत्पादन का व्यवसाय' शुरू करने और चलाने से जुड़े विभिन्न चरणों के बारे में चर्चा करना है।

गतिविधि

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को एक गाय या भैंस की तस्वीर दिखा कर उनके मन में जो भी विचार आते हैं उन्हें कहने के लिए आमंत्रित करेंगे।
- तस्वीर को देख कर प्रतिभागियों के मन में जो भी विचार आते हैं वे उन्हें कहेंगे।
- प्रशिक्षक सभी बिंदुओं को बोर्ड पर लिख लेंगे। प्रशिक्षक इस संबंध में अपनी बात को जोड़ते हुए प्राप्त प्रतिक्रियाओं को कार्य के अनुसार वर्गीकृत करेंगे।

सत्र 3

गाय या भैंस के लिए छप्पर बनाना

गाय या भैंस के लिए कितने बड़े छप्पर की आवश्यकता होगी यह मवेशी के कद–काठी पर निर्भर करता है। सामान्यतः एक गाय या भैंस के लिए 40 वर्ग फीट क्षेत्र की और एक बछिया के लिए 20 वर्ग फीट क्षेत्र की जरूरत होती है।

छप्पर बनाने के ध्यान रखने की जरूरी बातें

- जिसमें गाय या भैंस को सर्दी, गर्मी और बारिश से सुरक्षा मिल सके
- यह अच्छा रहेगा की आंगन सीमेंट का और ढलान वाला हो ताकि गाय–भैंस का पेशाब या पानी बह कर वहां से निकल जाए और वहां पर गंदगी जमा नहीं हो, साथ ही उसे आसानी से साफ भी किया जा सके। आंगन फिसलन वाला न हो इस बात का भी ध्यान रखें।
- पशु के घूमन–फिरने के लिए भी इसमें कुछ जगह होनी चाहिए।

गतिविधि : 'मेरी गाय के छप्पर में होगा ....'

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को यह बताएंगे कि गाय या भैंस को छप्पर में कितनी जगह की आवश्यकता होती है
- सभी प्रतिभागी 5–10 मिनट के लिए निम्न बिंदुओं पर विचार करेंगी
    - छप्पर किस जगह पर बनाया जाएगा
    - छप्पर बनाते समय किन बातों का ध्यान रखना होगा
- सभी प्रतिभागी पूरे समूह को बताएंगी कि उन्हें छप्पर बनाने की जगह कहाँ मिली और वे इसमें क्या–क्या व्यवस्था करना चाहती हैं और इसे बनाने में वे किन बातों का ध्यान रखेंगी।

- प्रशिक्षक इस बातचीत में अपनी तरफ से महत्वपूर्ण जानकारियाँ शामिल करते हुए सत्र को समेकित करेंगे।

सत्र 4

अच्छी नस्ल की गाय या भैंस खरीदना

दूध के उत्पादन और प्रजनन के लिए अच्छी नस्ल की स्वस्थ गाय या भैंस को चुनना और खरीदना बहुत महत्वपूर्ण है।

दूध उत्पादन के उद्देश्य से गाय या भैंस खरीदते समय निम्न बातों का खासतौर से ख्याल रखें

- ऐसी गाय या भैंस चुनें जो प्रतिदिन अधिक मात्रा में दूध देती हो
- जो अधिक समय दूध देती हो और जिसके दूध न देने या कम दूध देने की अवधि बहुत छोटी हो
- जिसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहतर हो ताकि जल्दी से बीमारियों के संक्रमण में न आए
- ऐसा मवेशी जो इससे पहले दो बार बछिया को जन्म दे चुकी हो। ऐसे पशु के अधिक दुधारू होने की उम्मीद होती है।

देसी नस्ल की ऐसी बहुत सारी गाय और भैंस मिल जाती हैं जिनमें से आप चुन सकती हैं। कुछ नस्लों की जानकारी नीचे दी गई है।

नस्ल कैसी दिखती है	जगह (राज्य, जिला)	स्थानवार औसत दूध उत्पादन (किलो में)	दूध में वसा की मात्रा(प्रतिशत में)
खरियार (सूखा) नस्ल की गाय भूरी या सलेटी रंग की होती है	ओड़िशा (जिला बलांगीर)	साल में दस से बाहर महीने में करीब 308 से 360 किलो तक दूध देती है। सत्रह माह के अंतराल में बछिया देती है। चार साल की होने के बाद पहली बार बछिया देती हैं।	4.9 प्रतिशत
लाल सिंधी नस्ल गहरे और हल्के लाल रंगों में पाई जाती है और इस पर सफेद धारियाँ होती हैं।	ओड़िशा (जिला बलांगीर और ढेंकानाल)	प्रत्येक दूध देने की अवधि में 1250 से 1800 किलो तक दूध देती है	4.5 प्रतिशत
जर्सी नस्ल रंग लाल भूरा होता है। इसका आगे से माथा चपटा होता है ओर शरीर सुता हुआ और कोणीय है।	ओड़िशा, मध्य प्रदेश	प्रत्येक दूध देने की अवधि में 4500 किलो तक	4.5 प्रतिशत

नस्ल कैसी दिखती है	जगह (राज्य, जिला)	स्थानवार औसत दूध उत्पादन (किलो में)	दूध में वसा की मात्रा(प्रतिशत में)
डाँगी (सूखा) नस्ल मझले या बड़े आकार की होती है, माथा छोटा और उभरा हुआ होता है, सींग छोटे लेकिन मोटे होते हैं और अतिवृष्टि में अनुकूलित हो जाती है। 	मध्य प्रदेश	औसतन 430 किलो दूध देती है जिसमें 175 किलो से लेकर 800 किलो तक दूध हो सकता है	4.3 प्रतिशत
हरियाणा नस्ल के गाय सफेद रंग की होती है और कद–काठी में बड़ी या मध्यम आकार की हो सकती है। इसके सींग छोटे होते हैं। 	यह मूलतः हरियाणा नस्ल की गाय है लेकिन उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में भी पाई जाती है।	प्रत्येक दूध देने की अवधि में 600 से 800 किलो तक	
होलस्टीन फ्रीशियां नस्ल की सबसे बड़ी गाय है। इनकी बनावट मजबूत और आकर्षक होती है और थन बहुत बड़े होते हैं। इन गायों के शरीर पर खास तरह के काले–सफेद धब्बे होते हैं। 	उड़ीसा	प्रत्येक दूध देने की अवधि में 6000 से 7000 किलो तक	
बचौर नस्ल ग्रे या ग्रेश सफेद दिखता है। अच्छी तरह से गोल बैरल, छोटी गर्दन और मांसपेशियों के कंधे। माथा चौड़ा और सपाट या थोड़ा उत्तल होता है। सींग मध्यम आकार के और रूखे होते हैं। 	बिहार (सितामड़ी, मधुबनी, दरभंगा जिला)	प्रत्येक दूध देने की अवधि में 495 से 605 किलो तक	4.5 – 5 प्रतिशत

नस्ल कैसी दिखती है	जगह (राज्य, जिला)	स्थानवार औसत दूध उत्पादन (किलो में)	दूध में वसा की मात्रा(प्रतिशत में)
गांगत्री नस्ल पूरा सफेद या ग्रे रंग का होता है। सींग मध्यम आकार के होते हैं और ऊपर की ओर नुकीले एवं घुमावदार होते हैं। माथे बीच में उथले खांचे के साथ सीधा और चौड़ा है। 	बिहार, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश	प्रत्येक दूध देने की अवधि में औसत दूध की उपज 1050 किलोग्राम के आसपास होती है, जो 900 से 1200 किलोग्राम तक होती है।	4.9 से 5.2 प्रतिशत
भडावरी मध्यम आकार की भैंस होती है। इसका शरीर हल्का और तांबई रंग का होता है। इनकी पलकें सामान्यतः तांबई या हल्के भूरे रंग की होती हैं। गर्दन के नीचे की ओर दो सफेद धारियाँ होती हैं। 	उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश	प्रत्येक दूध देने की अवधि में 800 – 1000 किलो तक। इनके दूध में वसा की मात्रा बहुत ज्यादा होती है	6 से 13 प्रतिशत
कलाहांडी नस्ल के भैंस सुनहरे बालों के साथ शरीर का रंग काला भूरा, और माथ सपाट होता है। सींग क्षैतिज रूप से पिछे, ऊपर और अंदर की ओर जाते हैं और यह आधा–चक्र जैसा हैं। 	ओड़िशा	प्रत्येक दूध देने की अवधि में 680 – 912 किलो तक	7.8 – 8.2 प्रतिशत
देशिला (दियारा) मध्यम आकार के शरीर के साथ हल्के काले से सिल्वर ग्रे कोट रंग और हल्के काले त्वचा के रंग के होते हैं। जलवायू के हिसाब से खुद को प्रबंधन कर लेते हैं। 	बिहार	प्रत्येक दूध देने की अवधि में 450 – 500 किलो तक	8.87 प्रतिशत

यह कुछ उदाहरण हैं। अपने इलाके में और खोजबीन करें और दुधारू पशुओं की अच्छी नस्लों के बारे में स्थानिय विशेषज्ञों से पता लगाएँ।

गतिविधि : मैं कौन सी गाय या भैंस खरीदूँ

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को उपरोक्त जानकारी के बारे में विस्तार से समझाएंगे। संभव हो तो प्रत्येक नस्ल के मवेशियों की तस्वीरें भी उन्हें दिखाएँ।
- प्रशिक्षक प्रत्येक नस्ल की गाय और भैंस के बारे में जानकारी को बोर्ड पर लिखेंगे।
- प्रत्येक प्रतिभागी इसमें से चुनें कि उन्हें किस नस्ल का मवेशी खरीदना है और क्यों?
- प्रत्येक प्रतिभागी अपने विचार को पूरे समूह के साथ साझा करे।

छोटे पैमाने के डेयरी आउटलेट्स तथा पशुओं के बीमे (इंशोरेंस) से सम्बन्धित सरकारी योजनाएं:

सरकारी योजनाएं और कार्यक्रम

डेयरीव्यवसाय लाखों ग्रामीण परिवारों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण सहायक स्रोत बन गया है और इसने सीमांत व महिला किसानों और भूमिहीन मजदूरों के लिए रोजगार और आय सृजन के अवसर प्रदान करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह समावेशी और टिकाऊ कृषि प्रणाली के लिए भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरा है क्योंकि यह पशुधन के विकास से सीधा सम्बन्ध रखता है। इसके भविष्यगामी दृष्टिकोणों को देखते हुए, छोटे पैमाने पर डेयरी चलाने वाले किसानों को समर्थन प्रदान करने के लिए, भारत सरकार डेयरी विकास योजनाओं के माध्यम गुणवत्तापरख दूध के उत्पादन, खरीद, प्रसंस्करण और विपणन के लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत करने का प्रयास कर रही है। कुछ योजनाएं निम्नलिखित हैं :

– डेयरी विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (NPDD)
– राष्ट्रीय डेयरी योजना (चरण– I)
– डेयरी उद्यमिता विकास योजना (DED)
– डेयरी सहकारी समितियों को सहायता
– डेयरी प्रसंस्करण और अवसंरचना विकास निधि (DIDF)

सरकार द्वारा दूध उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने, प्राकृतिक सेवा के लिए रोग मुक्त उच्च आनुवंशिक योग्यता वाले स्वदेशी नस्लों के बैल का वितरण, संरक्षण और विकास, किसानों को प्रोत्साहन, देशी नस्लों के कुलीन पशुओं को बनाए रखना आदि हेतु "राष्ट्रीय गोकुल मिशन", "गोपाल रत्न", "कामधेनु" जैसी विभिन्न परियोजनाएं शुरू की गईं हैं। छोटे पैमाने पर डेयरी उत्पादन कर रहे लोगों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का संगठन भी है। राज्य स्तर पर 'पशुपालन डेयरी और मत्स्य पालन विभाग' है। लोग छोटे पैमाने पर डेयरी व्यवसाय के लिए प्रदान की जाने वाली योजनाओं और सुविधाओं के बारे में अपडेट हो सकते हैं।

बीमा:

चूंकि डेयरी व्यवसाय पशुओं के स्वास्थ्य और प्रबंधन के साथ जुड़ा हुआ है, इसलिए बीमारियों और आग, बाढ़, चक्रवात आदि के प्रकोप के कारण पशुओं की मृत्यु होने और अर्थव्यवस्था को क्षति पहुंचने का जोखिम कारक भी बना रहता है। इस प्रकार की घटनाओं से बचने के लिए, पशुओं और डेयरी आउटलेट का बीमा करवाना जरूरी है।

लाभार्थियों को पशु या डेयरी आउटलेट का बीमा करने के लिए न्यूनतम राशि का भुगतान करने की जरूरत होती है। उन्हें निश्चित कारण से नुकसान की वसूली के रूप में एक बीमित राशि मिलती है। दावे के समय, एक योग्य पशुचिकित्सा से मृत्यु प्रमाण पत्र और पोस्टमार्टम परीक्षा रिपोर्ट संबंधित

बीमा प्राधिकरण को जमा करने की आवश्यकता होती है।

बीमा पॉलिसी बीमाकृत पशुओं की मृत्यु के लिए कवरेज प्रदान करती है जैसे कि–

1. प्राकृतिक दुर्घटना (आग, बिजली, बाढ़, सैलाब़, तूफान, झंझावात, भूकंप, चक्रवात, बवंडर, आंधी और अकाल सहित)
2. इस पोलिसी की अवधि के दौरान संकुचित या होने वाले रोग
3. सर्जरी
4. दंगा और हड़ताल और नागरिक हंगामा जोखिम

मामले जो बीमा के दायरे में नहीं आते हैं:

निम्नलिखित कारणों से मृत्यु या हानि के लिए बीमा कवर प्रदान नहीं किया जाएगा : –

– लापरवाही, अकुशल उपचार या जानवरों के उपयोग (कंपनी की सहमति के बिना) के लिए
– पोलिसी के दिशानिर्देशों से परे उद्देश्य।
– ऐसी बीमारियां/दुर्घटनाएं जो पॉलिसी शुरू होने से पहले से ही थीं।
– जानबूझकर हत्या, हालांकि, कानूनी और/या पशुचिकित्सक की देखरेख में हत्या एक अपवाद है।
– वायु या समुद्री परिवहन और 80 किलोमीटर से अधिक पारगमन।
– किसी भी प्रकार की आंशिक विकलांगता, भले ही यह स्थायी या अस्थायी हो।
– युद्ध, परमाणु प्रदर्शन, चोरी, गुप्त बिक्री के कारण नुकसान या बीमित पशु का गुम होना।
– पॉलिसी शुरू होने के 15 दिनों के भीतर पशु का मर जाना।
– पोलिसी पर 'नो टैग–नो क्लेम' का प्रावधान लागू हो।

पॉलिसी के तहत बीमा राशि पशु के बाजार मूल्य पर निर्भर करती है। प्रति वर्ष बेसिक प्रीमियम दर बीमित राशि के 4 प्रतिशत तक है।

'पशु धन बीमा योजना' किसानों, सहकारी समितियों, डेयरी फार्मों और इस तरह के स्वामित्व वाले स्वदेशी पशुओं को बीमा कवर देने के लिए एक ऑनलाइन ग्रामीण बीमा पॉलिसी है।

गैर–दुधारू सहित सभी पशुओं के लिए भारत के सभी जिलों में जोखिम प्रबंधन और बीमा योजना के लिए केंद्र सरकार द्वारा मवेशियों के लिए बीमा का प्रावधान है। आप पोलिसी और नियमों व शर्तों के बारे में बीमा सम्बन्धित विशिष्ट प्राधिकरण के स्थानीय सरकार के निकायों से विस्तार से जान सकते हैं।

गतिविधि : मेरे पशु और डेयरी आउटलेट का बीमा कैसे किया जा सकता है?

- प्रशिक्षक डेयरी पर सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में और उन योजनाओं का लाभ कैसे प्राप्त किया जा सकता है, इस बारे में बताएगा, ।
- प्रशिक्षक बीमा, डेयरी व्यवसाय में इसका महत्व, विभिन्न बीमा योजनाओं और उनके नियमों और शर्तों एवं बीमा योजनाओं का लाभ कैसे प्राप्त किया जा सकता है, इसके बारे में समझाएंगे।
- प्रतिभागी जोड़े में यह करने के लिए व्यावहारिकता के बारे में चर्चा करेंगे और यदि उनके पास कोई अन्य प्रश्न हैं तो साझा करेंगे।
- ट्रेनर प्रशिक्षुओं के प्रश्नों का उत्तर देंगे और इस विषय का समापन करेंगे।

दिन 2

सत्र 5

दिन 1 का दोहरान

प्रत्येक प्रतिभागी प्रशिक्षण के पहले दिन में उन्होंने जो सीखा है इस संबंध में अपने अनुभव को बड़े समूह के सामने प्रस्तुत करे।

पशुओं की देखभाल करना

- खाना और पानी
- प्रजनन
- आम बीमारियाँ एवं रोकथाम
- दूध उत्पादन में स्वच्छता
- बछड़ों के देखभाल

खाना और पानी

पशु	दुधारू अवधि में प्रतिदिन आहार की जरूरत				दूध नहीं देने के समय में प्रतिदिन आहार की जरूरत		
	सूखा चारा	हरा चारा	ठोस भोजन	पानी	सूखा चारा	हरा चारा	ठोस भोजन
भैंस	6 किलो	20 किलो	4 किलो	प्रति लीटर दूध उत्पादन के लिए लगभग 4 से 5 लीटर पानी	8 किलो	10 किलो	1 किलो
देसी गाय	2.5 किलो	15 किलो	3 किलो		3 किलो	10 किलो	1 किलो
संकर नस्ल की गाय	3 किलो	25 किलो	4 किलो		5 किलो	15 किलो	1 किलो

संतुलित आहार

दुधारू पशुओं के उत्तम स्वास्थ्य एवं अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए उन्हें संतुलित आहार खिलाया जाना जरूरी है। जिस आहार में पशु के सभी आवश्यक पोषक तत्व, जैसे प्रोटीन, ऊर्जा, वसा, खनिज तत्त्व एवं विटामिन उचित अनुपात तथा मात्रा में उपलब्ध हों, उसे संतुलित आहार कहते हैं।

असंतुलित आहार से पशुओं के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ने के साथ–साथ उनकी दुग्ध उत्पादन की क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से दुधारू पशुओं के शरीर के भार के अनुसार उनकी आवश्यकताओं जैसे जीवन निर्वाह, विकास तथा दुग्ध उत्पादन आदि के लिए भोजन में विभिन्न तत्वों जैसे प्रोटीन, ऊर्जा, वसा, खनिज तत्त्वों, विटामिन तथा पानी की आवश्यकता होती है। पशुओं के संतुलित आहार का मतलब है पशु को 'सही' समय पर 'सही' मात्रा में ऐसा खाना खिलाना जो उन्हें सभी प्रकार के पोषक तत्व प्रदान करता हो। पशुओं के आहार की मात्रा उसकी उत्पादकता एवं प्रजनन की अवस्था पर निर्भर करती है। पशु को कुल आहार का 2/3 भाग मोटे चारे से तथा

1/3 भाग दाने के गाढ़े मिश्रण के रूप में खिलाना चाहिए। हम मोटे तौर पर वयस्क दुधारू पशु के आहार को तीन श्रेणियों में बांट सकते हैं।

1. जीवन निर्वाह के लिए आहार
2. दुग्ध उत्पादन के लिए आहार
3. गर्भावस्था के लिए आहार

1. जीवन निर्वाह के लिए आहारः– यह आहार की वह मात्रा है जो पशु के शरीर को स्वस्थ रखने के लिये दिया जाता है। इसे पशु अपने शरीर की आवश्यक क्रियाएँ जैसे पाचन क्रिया, रक्त संचार, श्वसन, उत्सर्जन, चयापचय आदि कार्य सुचारू रूप से कर लेता है। इससे उसका वजन भी एक सीमा में स्थिर बना रहता है। चाहे पशु उत्पादन में हो या न हो यह आहार तो उसे देना ही पड़ता है। इसके अभाव में पशु कमजोर होने लगता है जिसका असर उसकी उत्पादकता तथा प्रजनन क्षमता पर पड़ता है। इस में देशी गाय के लिए तूड़ी अथवा सूखी घास की मात्रा 4 किलो तथा संकर गाय व विदेशी नस्ल के लिए यह मात्रा 4 से 6 किलो तक होती है। इसके साथ पशु को दाने का गाढ़ा मिश्रण भी दिया जाता है जिसकी मात्रा स्थानीय देशी गाय के लिए 1 से 1.25 किलो तथा संकर गाय, विदेशी नस्ल की गाय, देशी गाय या भैंस के लिए इसकी मात्रा 2.0 किलो रखी जाती है।

इस विधि द्वारा पशु को खिलाने के लिए दाने का मिश्रण उचित सामग्री को ठीक अनुपात में मिलाकर बनाना आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित सामग्री को दिए हुए अनुपात में मिलाकर संतोषजनक पशु दाना आहार बना सकते हैं। संतुलित आहार मिश्रण बनाने के विभिन्न तरीके हैं जो प्रशिक्षणार्थी स्थानीय पशु विशेषज्ञों से सीख सकते हैं। उदाहरण के रूप में सौ किलो संतुलित दाना बनाने की विधि इस प्रकार से हो सकती है–

- ☐ दाना (मक्का, जौ, गेहूं, बाजरा) इसकी मात्रा लगभग 35 प्रतिशत होनी चाहिए। चाहे बताए गए दाने मिलाकर 35 प्रतिशत हो या अकेला कोई एक ही प्रकार का दाना हो तो भी खुराक का 35 प्रतिशत दें।
- ☐ खली (सरसों, मूंगफली, बिनौला, अलसी, सूरजमुखी, कपास, नरियल आदि की खल) की मात्रा लगभग 32 किलो होनी चाहिए। इनमें से कोई एक खली को भी दाने में मिला सकते हैं।
- ☐ चोकर (गेंहू का चोकर, चना की चूरी, दालों की चूरी, राइस ब्रान) की मात्रा लगभग 35 किलो।
- ☐ खनिज लवण की मात्रा लगभग 2 किलो
- ☐ आयोडीन युक्त नमक लगभग 1 किलो
- ☐ विटामिन्स ए,डी–3 का मिश्रण 20–30 ग्राम

2. दुग्ध उत्पादन के लिए आहारः– पशुओं से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए उन्हें पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक चारे की आवश्यकता होती है। उत्पादन आहार पशु आहार की वह मात्रा है जिसे पशु को जीवन निर्वाह के लिए दिये जाने वाले आहार के अतिरिक्त दिया जाता है ताकि उससे दूध उत्पादन की मात्रा बढ़ सके। इसमें स्थानीय गाय (देशी) के लिए प्रति 2.5 किलो दूध के उत्पादन के लिए जीवन निर्वाह आहार के अतिरिक्त 1 किलो दाना देना चाहिए, जबकि संकर/देशी दुधारू गायों/

भैंसों के लिए यह मात्रा प्रति 2 किलो दूध के लिए दी जाती है। पशु को दुग्ध उत्पादन तथा जीवन निर्वाह के लिए साफ पानी दिन में कम से कम तीन बार जरूर पिलाना चाहिए।

3. गर्भावस्था के लिए आहारः– पशु की गर्भावस्था में उसे पाँचवें महीने से अतिरिक्त आहार दिया जाता है क्योंकि इस अवधि के बाद गर्भ में पल रहे बच्चे का विकास बहुत तेजी के साथ होने लगता है। अतः गर्भ में पल रहे बच्चे के उचित विकास के लिए तथा गाय/भैंस के अगले ब्यांत में सही दुग्ध उत्पादन के लिए इस आहार का देना नितांत आवश्यक है। इसमें स्थानीय गायों (देशी) के लिए 1.25 किलो तथा संकर नस्ल की गायों व भैंसों के लिए 1.75 किलो अतिरिक्त दाना दिया जाना चाहिये। इसके लिये जेबू नस्ल के पशुओं में 3 किलो तथा संकर गायों व भैंसों में 4–5 किलो दानें की मात्रा पशु की जीवन निर्वाह आवश्यकता के अतिरिक्त दिया जाना चाहिए। इससे पशु अगले ब्यांत में अपनी क्षमता के अनुसार अधिकतम दुग्धोत्पादन कर सकते हैं।

इसके साथ ही हरा चारा जैसे मक्का, ज्वार, जई, संकर नेपियर, बाजरा, रिजका, लोबिया तथा बरसीम चारा या मौसम के अनुसार उपलब्ध अन्य हरा चारे को सीमित मात्रा में खिलाया जा सकता है। यदि हरा चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है तो हर 10 किलो अच्छे किस्म के हरे चारे को देकर 1 किलो दाना कम किया जा सकता है। इससे पशु आहार की कीमत कुछ कम हो जाएगी।

एजोला हरा चारा के अन्य एक विकल्प है जो दुधारू पशुओं के दुग्ध उत्पादन क्षमता को 15 प्रतिशत तक ज्यादा बढ़ाती है। यह एक अति पोषक छोटा जलीय फर्न (पौधा) है, जो ठहरे हुए पानी में ऊपर तैरता हुआ होता है। एजोला को घर में हौदी बनाकर, तालाबों, झीलों, गड्ढों, और धान के खेतों में कही भी उगाया जा सकता है। कई किसान इसको टबों और ड्रमों में भी उगाते है। यह पौधा पानी में विकसित होकर मोटी हरी चटाई की तरह दिखने लगता है। आमतौर पर अजोला प्रोटीन, आवश्यक अमीनो एसिड, विटामिन (विटामिन ए, विटामिन बी 12 और बीटा कैरोटिन) तथा बढ़ने में सहायता करने वाले एजेंट और खनिजों से समृद्ध होता है। इसमें उच्च प्रोटीन और कम लिगनिन (जिसकी मौजुदगी पौधे को सख्त बनाता है) होने के कारण पशुधन आसानी से पचा सकते हैं। अजोला पशु दाने के साथ मिलाया जा सकता है या पशुओं को सीधा खिलाया जा सकता है।

अपने पशुओं के लिए एजोला का उत्पादन कैसे करें

उत्पादन वाले क्षेत्र में पहले खर–पतवार को हटाकर भूमि को समतल करना चाहिए। ईंटों को एक आयताकार क्षेत्र में सीधे खड़ा करें। एक सिल्पोलिन चादर से ईंटों से बने आयत को ढंक दें। अब 10–15 किलो छनी हुई मिट्टी समान रूप से गड्ढे में फैला दें। इसके बाद 2 किलो गोबर, 30 ग्राम सुपर फास्फेट को 10 किलो पानी के साथ मिश्रित कर घोल बनाएँ। अब इस घोल को प्लास्टिक चादर पर डालें । जल स्तर को 10 सेमी तक बढ़ाने के लिए इसमें ओर पानी डाल सकते हैं। 0.5 से 1 किलो शुद्ध एजोला कल्चर बीज को पानी के ऊपर समान रूप से फैला दें एवं इसके तुरंत बाद अजोला पर ताजे पानी का छिड़काव करें। 20 ग्राम सुपर फास्फेट और 1 किलो गोबर के मिश्रण को 5 दिन में एक बार अजोला गड्ढे में डालें। जो इसकी बढ़ने में मदद करेगा और यह मिश्रण 500 ग्राम तक की उपज प्रतिदिन के हिसाब से दिलाएगा। एक सप्ताह के अंदर अजोला पूरे हिस्से में फैलकर एक मोटी चटाई की तरह हो जाएगा। एजोला में खनिज सामग्री को बढ़ाने के लिए मैग्नीशियम, लोहा, तांबा तथा सल्फर आदि से युक्त एक सूक्ष्मपोषक मिश्रण को सप्ताहिक अंतराल पर डाला जा सकता है। नाइट्रोजन का निर्माण तथा सूक्ष्म तत्वों की कमी को रोकने के लिए प्रत्येक 30 दिनों में ताजा 5 किलो मिट्टी से बदल दें और 25–35 प्रतिशत पानी को प्रत्येक 10 दिनों के बाद ताजा पानी से बदल दें। प्रति छह महीनों में क्यारी को साफ करें, पानी तथा मिट्टी को बदलें एवं नए एजोला का संचारण करें। कीटों तथा बीमारियों से संक्रमित होने पर एजोला के शुद्ध कल्चर से एक नयी क्यारी तैयार तथा संचारण करें।

एजोला फसल की कटाई– तेजी से बढ़ने के कारण 10–15 दिनों में गड्ढा भर जाता है। तब से 500 से 600 ग्राम अजोला प्रत्येक दिन काटा जा सकता है। 15वें दिन के बाद प्लास्टिक छलनी या ट्रे कि मदद से इकट्ठा किया जा सकता है।

हरे चारे को संरक्षित कैसे करें

पशुओं से अधिकतम दुग्ध उत्पादन प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रर्याप्त मात्रा में पौष्टिक चारे की आवश्यकता होती है। चारे को अधिकांशतः हरी अवस्था में पशुओं को खिलाया जाता है तथा इसकी अतिरिक्त मात्रा को सुखाकर भविष्य में प्रयोग करने के लिए भंडारण कर लिया जाता है। सामान्यतः भंडारण करने से चारे में पोषक तत्व बहुत कम रह जाते है। इसी चारे का भंडारण यदि वैज्ञानिक तरीके से किया जाए तो उसकी पौष्टिकता में कोई कमी नहीं आती तथा कुछ ख़ास तरीकों से इस चारे को उपचारित करके रखने से उसकी पौष्टिकता को काफी हद तक बढ़ाया भी जा सकता है। चारे का निम्न विधियों के द्वारा भंडारण किया जा सकता है–

हे (सुखे घास के ढेर) बनाना–हे बनाने के लिए हरे चारे या घास को इतना सुखाया जाता है जिससे की उसमें नमी की मात्रा 15–20 प्रतिशत तक ही रह जाए। हे बनाने के लिए लोबिया, बरसीम, रिजका, लेग्यूम्स तथा ज्वार, नेपियर, जवी, बाजरा, ज्वार, मक्की, गिन्नी अंजन आदि घासों का प्रयोग किया जाता है। हे बनाने के लिए चारा सुखाने हेतु निम्नलिखित विधियों में से कोई भी विधि अपनाई जा सकती है–

⌘**चारे को परतों में सुखाना**–जब चारे की फसल पकने की अवस्था में होती है तो उसे काटकर परतों में पूरे खेत में फैला देते हैं तथा बीच–बीच में उसे पलटते रहते हैं जब तक की उसमें

पानी की मात्रा लगभग 15 प्रतिशत तक न रह जाए। इसके बाद इसे इकट्ठा कर लिया जाता है तथा ऐसे स्थान पर जहाँ वर्षा का पानी न आ सके इसका भंडारण कर लिया जाता है।

झ्चारे को गट्ठर में सुखाना–इसमें चारे को काटकर 24 घंटों तक खेत में पड़ा रहने देते हैं इसके बाद इसे छोटी–छोटी ढेरियों अथवा गट्ठरों में बाँध कर पूरे खेत में फैला देते हैं। इन गट्ठरों को बीच–बीच में पलटते रहते हैं जिससे नमी की मात्रा घट कर लगभग 18 प्रतिशत तक हो जाए।

झ्चारे को तिपाई विधि द्वारा सुखाना– जहाँ भूमि अधिक गीली रहती हो अथवा जहाँ वर्षा अधिक होती हो ऐसे स्थानों पर खेतों में तिपाइयाँ गाड़कर चारे की फसलों को उन पर फैला देते हैं। इस प्रकार वे भूमि के बिना संपर्क में आए हवा व धूप से सूख जाती है कई स्थानों पर घरों की छत पर भी घासों को सुखा कर हे बनाया जाता है।

चारे का यूरिया द्वारा उपचार–सूखे चारे जैसे भूसा, तूड़ी, पुआल आदि में पौष्टिक तत्व लिगनिन को अंदर जकड़े रहते हैं जोकि पशु आसानी से पचा नहीं सकते हैं। इन चारों को कुछ रासायनिक पदार्थों द्वारा उपचार करके इनके पोषक तत्वों को लिगनिन से अलग कर लिया जाता है। इसके लिए यूरिया उपचार की विधि सबसे सस्ती तथा उत्तम है। यूरिया उपचार विधि के बारे में अधिक जानकारी के लिए प्रतिभागी स्थानीय विशेषज्ञों से परामर्श ले सकते हैं।

साइलेज बनाना– जिस हरे चारा में नमी की पर्याप्त मात्रा होती है उसे हवा की अनुपस्थिति में जब किसी गड्ढे में दबाया जाता है तो वह चारा कुछ समय बाद एक अचार की तरह बन जाता है जिसे साइलेज कहते हैं। हरे चारे की कमी होने पर साइलेज का प्रयोग पशुओं को खिलाने के लिए किया जाता है। साइलेज लगभग सभी घासों से अकेले अथवा उनके मिश्रण से बनाया जा सकता है। जिन फसलों में घुलनशील कार्बोहाईड्रेटस अधिक मात्रा में होते हैं जैसे की ज्वार, मक्की, गिन्नी घास नेपियर सिटीरिया आदि, वे साइलेज बनाने के लिए उपयुक्त होती हैं।

साइलेज कैसे बनाएँ–साइलेज जिन गड्ढों में बनाया जाता है वह कई प्रकार के हो सकते हैं। जैसे ट्रेन्च साइलो बनाने में सस्ते व आसान होते हैं। आठ फुट गहराई वाले गड्ढे में 4 पशुओं के लिए तीन माह तक का साइलेज बनाया जा सकता है। गड्ढा ऊँचा होना चाहिए तथा इसे भली प्रकार से कूटकर सख्त बना लेना चाहिए। साइलो के फर्श व दीवारें पक्की बनानी चाहिए और यदि ये सम्भव न हो तो दीवारों की लिपाई भी की जा सकती है।

साइलेज बनाने के लिए जिस भी हरे चारे का इस्तेमाल करना हो उसे उपयुक्त अवस्था में खेत से काट कर 2 से 3 सेंटीमीटर के टुकड़ों में कुट्टी बना लें और गड्ढे में दबा कर भरें। फिर इसके ऊपर पोलीथिन की शीट बिछाकर ऊपर से 18–20 सेंमी. मोटी मिट्टी की परत बिछा दें। इस परत को गोबर व चिकनी मिट्टी से लीप दें। दरारें पड़ जाने पर उन्हें मिट्टी से बंद करें ताकि हवा व पानी गड्ढे में प्रवेश न कर सकें। लगभग 45 से 60 दिनों में साइलेज बन कर तैयार हो जाता है जिसे गड्ढे को एक तरफ से खोलकर मिट्टी व पोलीथिन शीट हटाकर आवश्यकतानुसार पशु को खिलाया जा सकता है। साइलेज को निकालकर गड्ढे को पुनः पोलीथिन शीट व मिट्टी से ढंक देना चाहिए।

इस संबंध में अधिक जानकारी के लिए स्थानीय पशु विशेषज्ञ से संपर्क करें।

प्रजनन

कृत्रिम गर्भाधान एक कृत्रिम प्रजनन प्रक्रिया है जिसके तहत मादा प्रजनन क्षेत्र में वीर्य को इकट्ठा कर कृत्रिम प्रजनन कराया जाता है। यदि आप अपने पशुओं में कृत्रिम प्रजनन कराना चाहते हैं तो इसके लिए पशुपालन संबंधी चिकित्सक सं संपर्क कर इसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करें।

कृत्रिम गर्भाधान के फायदे

- छोटे किसानों के लिए आर्थिक लाभ
- दोषपूर्ण जीन के प्रसार पर रोक
- प्रजनन संबंधी रोगों के संक्रमण पर नियंत्रण

एक गाय और भैंस के दूध देने का चक्र

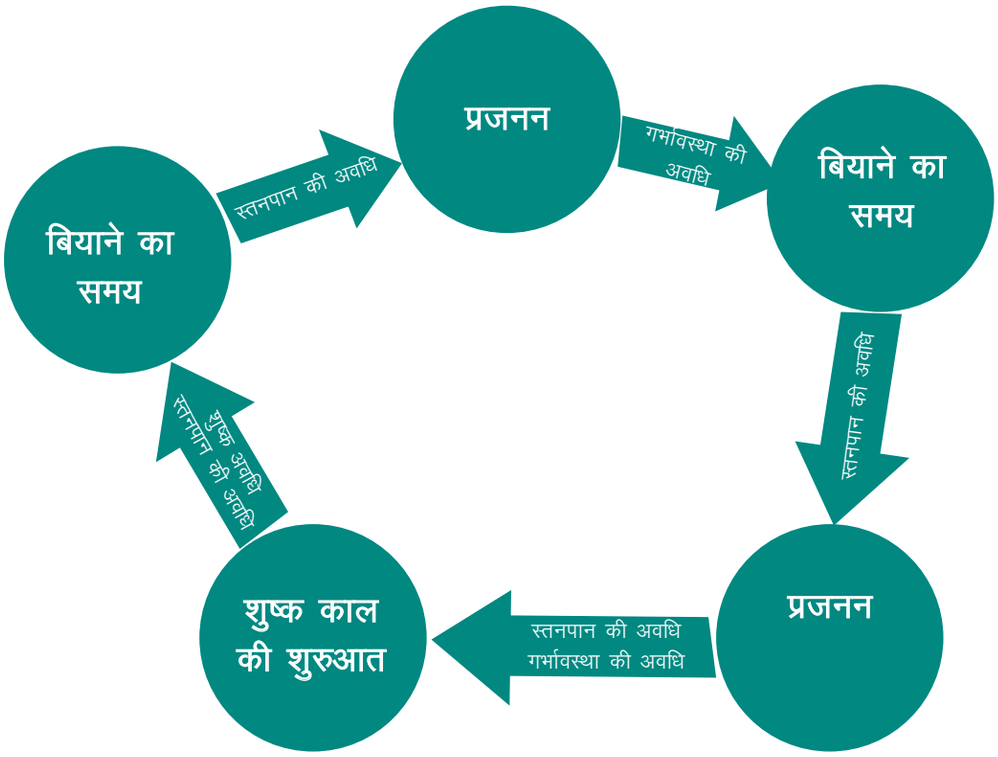

गतिविधि : मैं अपनी गाय/भैंस को क्या खिलाऊँ

- प्रतिभागी अपने–अपने जोड़े में इस बारे में चर्चा करेंगे कि वे अपने पशुओं को क्या खिला सकते हैं
- प्रत्येक जोड़ा स्थानीय स्तर पर उनके पशुओं के लिए उपलब्ध चारे की व्यवस्था के बारे में चर्चा करेंगे
- प्रत्येक जोड़ा समूह में अपनी सूची को प्रस्तुत करेगा
- अन्य प्रतिभागी उनकी सूची में और सामग्री जोड़ने की सलाह देंगे
- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को उपरोक्त तालिका में दी गई जानकारी समझाएंगे
- प्रशिक्षक कृत्रिम गर्भाधान की प्रक्रिया के बारे में भी समझाएंगे
- इसके बाद प्रशिक्षक गाय और भैंस के दूध देने के चक्र के बारे में भी समझाएंगे

सत्र 6

आम बीमारियाँ एवं रोकथाम

गाय और भैंस को होने वाले कुछ सामान्य बीमारियाँ

बीमारियाँ/स्थिति	गाय/भैंस	कारण	लक्षण	बचाव
लंगड़ा बुखार या ब्लैक क्वाटर	भैंस	जीवाणु या बैक्टीरियां	तेज बुखार, लंगड़ाना और 48 घंटे में मृत्यु	टीकाकरण
गलघोंटू या हैमरहे. जिक सेप्टिसीमिया	भैंस और गाय	जीवाणु या बैक्टीरियां, खाना और पानी	कंठ में और गले के आसपास सूजन, सांस लेने में तकलीफ, तेज बुखार और मृत्यु	वार्षिक टीकाकरण तेल सहायक टीके वाले रोगनिरोध टीके
मुँहपका और खुरपका रोग	गाय और भैंस	विषाणु या संक्रमित पशु के साथ सीधा संपर्क	तेज बुखार, सुस्ती, बहुत अधिक लार आना, मुँह या पैर में फफोला बन जाना और उससे चिपचिपा रिसाव होना, लंगड़ाना और दूध देने में कमी आ जाना, गर्भपात	छमाही टीकाकरण
बाँझपना	गाय और भैंस	कुपोषण, संक्रमण, जन्मजात दोष, हार्मोन संबंधी असंतुलन		उचित पोषण, सही समय पर जन्म और पालन–पोषण, प्रत्येक छह माह में एक बार कीटरोधक उपचार की आवश्यकता

प्रशिक्षक प्रतिभागियों को गाय और भैंसों में होने वाले सामान्य रोगों के बारे में जानकारी देंगे।

दूध उत्पादन में स्वच्छता

दूध उत्पादन का सीधा संबंध हमारे भोजन और खानपान से है इसलिए यह बहुत जरूरी है कि पशु पालन, पशुओं के खान–पान, दूध निकालने, भंड़ारण करने और बेचने की पूरी प्रक्रिया और वातावरण में स्वच्छता के बारे में अतिरिक्त सावधान रहा जाए। यह बहुत जरूरी है कि दूध को खराब होने से बचा कर रखा जाए और साथ ही उसके कारण होने वाली बीमारियों का भी पूरा ध्यान रखा जाए।

आइए दूध के उत्पादन में स्वच्छता का ध्यान रखने से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण बातों को जानें:

⌘**पशु के स्वास्थ्य का ध्यान रखना–.** पशुओं के थन तथा अन्य अंगों के रोगों की नियमित जाँच

होनी चाहिए और किसी भी तरह के संक्रमण का पता चलने पर उन्हें अन्य पशुओं से अलग रखते हुए उनका तत्काल इलाज कराया जाना चाहिए। साफ–सफाई का ध्यान तो सभी समय रखा ही जाना चाहिए। संक्रमित पशु जब तक पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो जाए तब तक उसके दूध को आपूर्ति के दूध के साथ न मिलाएँ।

ॠपशु के थन और शरीर की स्वच्छता का ध्यान रखना –दुधारू पशुओं के शरीर और थनों को दूध निकालने से पहले एक बार साफ पानी से धो कर फिर गुनगुने पानी (लगभग 50 डिग्री तापमान) से धोएँ और साफ कपड़े से पौंछ लें । आवश्यकता पड़ने पर सोडियम हाइड्रोक्लोराइड के घोल या क्लोरीन युक्त पानी से भी धो सकते हैं।

ॠदूध निकालने वाले की सफाई –पशुओं से दूध निकालने वाली महिला को भी अपनी साफ–सफाई का पूरा ध्यान रखने की आवश्यकता है।

• वह दूध निकालने के दौरान छींके और खाँसें नही।

• वह और ऐसी किसी बीमारी से ग्रस्त न हों जिससे दूध के संक्रमित होने की आशंका हो।

ॠदूध के बरतनों और अन्य उपकरणों की सफाई

• दूध निकालने और इकट्ठा करने के लिए चिकनी सतह वाले धातु के बरतनों का इस्तेमाल करें

• दूध के बरतन को इस्तेमाल के बाद साबुन या डिटर्जेंट पाउडर से मल कर साफ गर्म पानी से अच्छी तरह धों लें

ॠदूध निकालने के दौरान सफाई

•दूध निकालने के दौरान थनों में दूध को छोड़ें नहीं क्योंकि पीछे बचे दूध में जीवाणु सक्रियता बहुत बढ़ जाती है और अगली बार निकाले जाने वाले दूध में मिल जाने पर अगली बार का दूध अधिक जीवाणु सक्रिय हो जाता है।

•दूध निकालते समय थन और हाथों को धोकर अच्छे से पौंछ लें, हाथ या थन गीलें नहीं रहने चाहिए। हाथ या थन गीले रहने पर हाथों और थनों में बचे धूल के कणों को गीलेपन के कारण दूध में टपकने की आशंका रहती है और इससे भी दूध में जीवाणुओं के बढ़ने की आशंका रहती है।

ॠवातावरण की स्वच्छता

• गाय का छप्पर साफ–सुथरा और हवादार होना चाहिए, जिसमें नमी, रौशनी, धूप, जमीन पर बिछाई जाने वाली घास, हवा का आर–पार आना जाना, छतें और दीवार तथा अन्य कीटाणु आदि सभी पहलुओं के लिहाज से सफाई का ध्यान रखें।

• गाय के छप्पर और दूध निकालने की जगह और इंसान जहाँ रहते हैं उसके बीच पर्याप्त दूरी होनी चाहिए। खाद के गड्ढ़े, नाली या रुका हुआ पानी आदि भी इन जगहों के आस–पास नहीं होने चाहिए।

गतिविधि : 'पशुओं को बिमारियों से कैसे बचाऐं'

- प्रतिभागी दो–दो के जोड़ें में निम्न बातों पर चर्चा करेंगे

–पशुओं के सामान्य बिमारियां क्या है और उन्हे इससे कैसे बचाया जा सकता है

–दूध निकालते समय उन्हें किन बातों का ध्यान रखने की और किन बातों से बचने की जरूरत है

- प्रत्येक जोड़ा अपनी चर्चा को प्रस्तुत करे
- प्रशिक्षक प्रतिभागियों की बातों को दो भागों – क्या करें और क्या न करें, में दर्ज करते जाएँ
- प्रशिक्षक उपर दी गई जानकारी के आधार पर प्रस्तुतियों के अंत में अपने बिंदु जोड़ें

सत्र 7

बछड़ों का देखभाल

बछड़ों को खासतौर से तीन महीने का होने तक विशेष देखभाल की जरूरत होती है क्योंकि उनके बहुत से संक्रामक रोगों के चपेट में आने की आशंका रहती है। खासतौर से जन्म के पहले सप्ताह में उनमें साँस या आँत के संक्रमण होने की आशंका बहुत रहती है।

बछड़े की सुरक्षा के उपायः जन्म के तुरंत बाद बछड़े के नाक और मुंह से कफ और बलगम आदि को साफ करें। बछड़े को जन्म के बाद पाँच दिन तक बछड़े के बाड़े में रखाा जाना चाहिए और यह खयाल रखें के यह बाड़ा साफ–सुथरा हो। पाँच दिन के बाद बछड़े के खुला घूमने–फिरने के लिए छोड़ा जा सकता है, लेकिन यह ध्यान रखें की जगह साफ–सुथरी हो।

–बछ़डे के जन्म के बाद पहले घंटे में माँ का पहला दूध यानि कोलस्ट्रम बछड़े को पीने के लिए मिलना चाहिए।
–उन्हें जल्दी–जल्दी दूध पिलाया जाना चाहिए। खासतौर से सुबह और शाम में दूध पिलाया जाना चाहिए। उन्हें एक साफ–सुथरे तसले में साफ और ताजा पानी पीने के लिए दिया जाना चाहिए।
–एक से डेढ़ महीने का होने के बाद उन्हें शुरूआती गाढ़ा खाना देना शुरू कर दिया जाना चाहिए।
–धीरे–धीरे उनके शरीर के वजन की तुलना में दूध की मात्रा को 1/10 से 1/15 तक कम कर दिया जाना चाहिए।
–उनके प्रथम अमाश्य के विकास के लिए अच्छे किस्म का सूखा चारा इसी समय में देना शुरू कर दें।
–दो से ढाई माह के होने के बाद बछड़े को माँ का दूध पिलाना बंद कर दें।
–चार महीने तक बछड़े का वजन और नाप लेते रहना जरूरी है। (अलग–अलग नस्ल के बछ़ड़ों के वजन बढ़ने में प्रतिदिन 300 से 600 ग्राम तक का अंतर हो सकता है।)

बछड़ो के स्वास्थ्य की देखभाल और उपचार

पशु चिकित्सक से सलाह लेकर बछ़ड़े को पहली कीड़े मारने की दवा दें और 21 दिन के बाद इसका दोहरान करें। किसी खास प्रकार की कीड़ा मारने की दवा के प्रति उनकी प्रतिरोधक क्षमता विकसित न हो जाए, इस लिए उन्हें दी जाने वाली दवा समय–समय पर बदलते रहें।

स्थानीय नस्ल के गाय और भैंस के बछड़ों को एक से तीन माह तक प्रतिदिन दिए जाने वाले खाने का विवरण नीचे दिया गया है

गाय और भैंस के बछड़ों को एक से तीन माह तक प्रतिदिन दिए जाने वाले खाने के विवरण

उम्र	पूरा दूध (किलो में)	बिना मलाई का दूध (किलो में)	बछड़े का शुरुआती भोजन (ग्राम में)
दिन 1	2.0		
दिन 4	2.0		खाने के लिए दें
सप्ताह 2	2.5	0.75	50–70
सप्ताह 3	1.75	0.75	50 – 70
सप्ताह 4	1.75	0.75	75 – 100
सप्ताह 5	1.25	0.75	100 –150
सप्ताह 6	0.75	0.75	250 – 300
सप्ताह 7	0.50	0.75	350 – 450
सप्ताह 8	0.50	0.50	450 – 500
सप्ताह 9	–	0.50	550 – 600

बछड़ों को तीन से छह माह तक प्रतिदिन दिए जाने वाले खाने का विवरण

उम्र	भोजन का प्रकार	भोजन की मात्रा
3 से छह माह	गाढ़ा मिश्रण	1.0 से 1.25 किलो
	हरा चारा	5 से 10 किलो
	या	
	गाढ़ा मिश्रण	1.25 से 1.50 किलो
	हरा चारा	3 से 5 किलो
	सूखा चारा	1.5 से 2 किलो

गतिविधि : 'बछड़ों के देखभाल कैसे करें'

- प्रशिक्षक बछड़ों के देखभाल के बारे में बताऐंगें
- प्रतिभागी दो–दो के जोड़ों में बछड़ों के देखभाल कैसे किया जाए इस पर चर्चा करेंगे और अपनी चर्चा को प्रस्तुत करेंगे
- प्रशिक्षक उपर दी गई जानकारी के आधार पर प्रस्तुतियों के अंत में अपने बिंदु जोड़ेंगे

सत्र 8

क्षेत्र भ्रमण की तैयारी

- प्रतिभागी एक दूध उत्पादन करने वाले (व्यवसायी) से मिलने जाने के लिए दो–दो के जोड़े बनाएंगे
- प्रत्येक जोड़ा इस दूध के व्यवसायी से पूछने के लिए अपने–अपने प्रश्न तैयार कर लेगा
- प्रत्येक जोड़ा अन्य प्रतिभागियों और प्रशिक्षक के सामने अपने प्रश्न प्रस्तुत करेगा। अन्य प्रतिभागी और प्रशिक्षक सभी जोड़ों को सुनने के साथ उन्हें इस संबंध में अपने सुझाव देंगे।
- प्रश्न, दूध उत्पादन के चरणों से जुड़े हुए होने चाहिए – जैसे छप्पर, चारे के प्रवन्धन, प्रजनन,

बीमारी, गाय एवं भैंस के नस्लें, बछडे के देखभाल, दूध के उत्पादन में बृध्दि एवं स्वच्छता, दूध की बिक्री, निवेश, आदि के बारे में प्रश्न इन प्रश्नों में शामिल होने चाहिए।

दिन 3

सत्र 9

दूध का उत्पादन करने वाले से मिलने जाना और बातचीत करना

• प्रतिभागी दूध का उत्पादन करने वाले एक व्यक्ति से मिलने जाएंगे और पहले से तैयार प्रश्नों के आधार पर बातचीत करेंगे।

• वे बातचीत के दौरान महत्वपूर्ण बातों को कॉपी में लिख लेंगे ताकि उसके बारे में चर्चा किया जा सके।

क्षेत्र के दौरे से मिली सीख का निष्कर्ष निकालना

प्रतिभागी जोडे में दिन भर क्षेत्र के दौरे में दूध उत्पादन करने वालों के साथ बातचीत के दौरान मिली जानकारी पर चर्चा कर निष्कर्ष निकालेंगे।

प्रत्येक प्रतिभागी –

• क्षेत्र के दौरे के सीख एवं अपने विचारों को अपने साथी को प्रस्तुत करेंगे

• सीखी गयी बातों के आधार पर अपनी दूध व्यवसाय के लिए क्या निर्णय ली उस पर एक लेख प्रस्तुत करेंगे।

दिन 4

सत्र 10

दूध उत्पादन करने वाले से गाय या भैंस के छप्पर बनाने और उसका रखरखाव के बारे में बात करना

प्रतिभागी दूध का उत्पादन करने वाले से मिलने जाएंगे और उससे, गाय या भैंस के छप्पर कैसे कम लागत में बनाया जाए और उसका अच्छे से कैसे रखरखाव किय जाए उसके बारे में पहले से तैयार प्रश्नों के आधार पर बातचीत करेंगे। वें छप्पर के आकार, छप्पर बनाने के सुरक्षित जगह, उसके आसपास के बातावरण की स्वच्छता एवं साफ–सफाई, छप्पर बनाने के लागत आदि के बारे में प्रश्न करेंगे तथा उन पर चर्चा करेंगे।

• वे बातचीत के दौरान महत्वपूर्ण बातों को अपनी कॉपी में लिख लेंगे ताकि उसके बारे में चर्चा किया जा सके।

क्षेत्र के दौरे से मिली सीख का निष्कर्ष निकालना

प्रतिभागी जोडे में दिन भर क्षेत्र के दौरे में दूध उत्पादन करने वालों के साथ बातचीत के दौरान गाय या भैंस के छप्पर बनाने के बारे मे मिली जानकारी पर चर्चा कर निष्कर्ष निकालेंगे।

प्रत्येक प्रतिभागी –

• क्षेत्र के दौरे के सीख एवं अपने विचारों को अपने साथी को प्रस्तुत करेंगे
• सीखी गयी बातों के आधार पर अपनी गाय या भैंस के छप्पर बनाने के बारे में क्या निर्णय लिया उस पर एक लेख प्रस्तुत करेंगे।

दिन 5

सत्र 11

बाजार को जानना

क्या काम करना है यह निर्णय करने से पहले प्रतिभागी यह जानकारी प्राप्त कर चुके होंगे कि उनके इलाके में और कौन–कौन दूध का व्यवसाय करते हैं। इस बार क्षेत्र भ्रमण के दौरान वह दूध एवं दूध उत्पादों का मांग कैसा है, और इस इलाके में वे दूध की बिक्री किस दाम पर करते हैं आदि के बारे में पता लगाएंगे । वे एक गतिविधि भी करेंगें कि वे अपने व्यवसाय में दूध किसे बेच सकते हैं या 'दूध का खरीदार कौन' होगा ?

- प्रतिभागी गावं में लोगों से मिलेंगे
- वे बातचीत के दौरान महत्वपूर्ण बातों को अपनी कॉपी में लिख लेंगे ताकि उसके बारे में चर्चा किया जा सके।

गतिविधिः दूध का खरीददार कौन?

• प्रतिभागी गावं में लोगों से प्राप्त जानकारियों को एक दूसरे से साझा करेंगे।

• प्रतिभागी इस बारे में चर्चा करेंगे कि उनके इलाके में दूध की आवश्यकता किन जगहों पर ज्यादा रहती है। जैसे मिठाई की दुकान, चाय की थड़ी, कुछ घरों में, दूध के सहकारी भंडारों पर और उन कंपनियों को जो दूध के उत्पादन तैयार करती हैं।

• प्रत्येक प्रतिभागी उन संभावित खरीदारों की सूची बनाएंगी जिन्हें वे दूध बेच सकती हैं। यह सूची इतनी बड़ी होनी चाहिए कि व्यवसायी के यहां उत्पादित सारे दूध की बिक्री हो सके।

दिन 6

सत्र 12

गांवों का दौरा करना और अच्छी गुणवत्ता वाली नस्ल की दूधारू गाय या भैंस की खोज करनाा

अधिक दूध के उत्पादन और प्रजनन के द्वारा और ज्यदा संख्या में पशु पाने के लिए अच्छी नस्ल की स्वस्थ गाय या भैंस को चुनना और खरीदना बहुत महत्वपूर्ण है। आप आस–पास के गावों में घुमें और ऐसे गाय या भैंस चुनें जो प्रतिदिन अधिक मात्रा में दूध देती हो, और दूध में वसा के मात्रा ज्यादा हे। देसी नस्ल की ऐसी बहुत सारी गाय और भैंस मिल जाती हैं जिनमें से आप चुन सकती हैं। कुछ नस्लों की जानकारी आपको पहले से भी हुई होगी। इसके लिए आप स्थानीय पशु विशेषज्ञ से मिल कर सलाह ले सकते हैं।

• प्रतिभागी गावं में लोगों से मिलेंगे (वे जोड़े में या छोटे समूह में भी जा सकते हैं)

• वे बातचीत के दौरान अलग– अलग नस्ल के पशुओं के नाम और उनके दूध देने की क्षमता आदि महत्वपूर्ण बातों को अपनी कॉपी में लिख लेंगे ताकि उसके बारे में विचार किया जा सके।

• प्रत्येक प्रतिभागी लोगों से पूछ–ताछ एवं अपने पहले से प्राप्त जानकारी के आधार पर निर्णय लेंगे कि उन्हें किस नस्ल का गाय या भैंस खरीदना है और क्यों?

• प्रतिभागी अपने विचारों को एक दूसरे के साथ साझा करेंगे एवं अपना सूझाव देंगे।

दिन 7

सत्र 13

क्षेत्र भ्रमण का अनुभव साझा करना

• प्रतिभागी अपने चार दिन के क्षेत्र भ्रमण के दौरान प्राप्त ज्ञान और अनुभव को समूह में साझा करने की तैयारी करेंगे

• प्रत्येक जोड़ा अपने अनुभव को अन्य सभी प्रतिभागियों के बीच साझा करेगा।

सत्र 14

दूध और दूध उत्पादों का मूल्य निर्धारित एवं गुणवत्ता नियंत्रण करना

बाजार में किसी उत्पाद की कीमत ग्राहक की मांग को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। इसलिए, डेयरी उत्पाद को बेचने के लिए इसकी कीमत प्रतिस्पर्धी होनी चाहिए। इसका मतलब यह है कि कच्चे माल की खरीद, प्रसंस्करण, पैकेजिंग, भंडारण, विपणन और वितरण में शामिल लागत को यथासंभव कम रखा जाना चाहिए। आम तौर पर, डेयरी उत्पाद की कीमत में निम्नलिखित लागतें शामिल होंगी :

- कच्चे दूध की लागत, कच्चे माल की लागत
- दूध संग्रह और परिवहन
- प्रसंस्करण की लागत
- पैकेजिंग की लागत
- विपणन और वितरण की लागत
- कर और शुल्क आदि

दूध और दूध उत्पादों की गुणवत्ता नियंत्रण

बाजार आम तौर पर हमें दूध में मिलावट के कई उदाहरण सुनने को मिलते हैं। दूध में मिलावट होती है अगर उसकी गुणवत्ता कम होती है या उन पदार्थों के जुड़ने से प्रभावित होती है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं या उन पदार्थों को हटाने से जो पौष्टिक होते हैं। हालांकि दूध में सबसे आम मिलावट पानी से की जाती है। दूध में मिलावट करने के लिए तेजी से डिटर्जेंट, कास्टिक सोडा, ग्लूकोज, सफेद पेंट और रिफाइंड तेल का इस्तेमाल किया जा रहा है।

पानी दूध को पतला कर देता है, लेकिन कोई अन्य मिलावट होने पर यह मोटा दिखाई देता है। नमक, डिटर्जेंट और ग्लूकोज जैसे मिलावटी पदार्थ पतले दूध में मोटाई और चिपचिपाहट बढ़ाते हैं जबकि स्टार्च इसे जमने से रोकता है। इसलिए बिना पानी मिलावट वाले दूध से यह संदेह करना मुश्किल हो जाता है कि दूध पतला है या मिलावटी है।

अपने ग्राहकों का भरोसा हासिल करने के लिए एक डेयरी किसान को इन कुप्रथाओं (मिलावट करना, पानी मिलाना) से दूर रहना होगा। इससे उसे एक स्थायी और सफल व्यवसाय स्थापित करने में मदद मिलेगी।

किसी भी स्तर पर मिलावट की जांच करने के लिए, परीक्षण और गुणवत्ता नियंत्रण डेयरी इकाई का एक आवश्यक घटक होना चाहिए। असत बिचौलियों और गैरवफादार कामगारों द्वारा दूध में मिलावट किये जाने का खतरा बना रहता है। कच्चे दूध की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए दूध के परिवहन के विभिन्न चरणों के दौरान जैसे कि डेयरी से बिचौलिया तक और अंत में उपभोक्ता तक कुछ बुनियादी गुणवत्ता परीक्षण किए जाने चाहिए। डेयरी फार्म पर बेहतर स्वच्छता भी बनाकर रखनी चाहिए और परिवहन प्रक्रिया के दौरान दूध और दूध उत्पादों की जांच की जानी चाहिए कि कहीं मिलावट तो नहीं की जा रही है।

डेयरी में जोखिम कारक और इससे कैसे निपटें?

दूध को सीधे बेचने के साथ–साथ इसे थोड़ा प्रसंस्करण करके अन्य दूध उत्पाद तैयार करके जैसे कि मक्खन दूध, दही, पनीर, घी आदि को बेचना अधिक लाभदायक साबित होता है। लेकिन बहुत सारे जोखिम कारक हैं जो दूध और अन्य दूध उत्पादों को खराब करते हैं। छोटे दूध उत्पादक अगर उचित तरीके से दूध का रखरखाव नहीं करते हैं या दूध के उत्पाद सभी आवश्यक उपकरणों की मदद से तैयार नहीं किये जाते हैं, तो उन्हें व्यवसाय में घाटा हो सकता है। इसलिए छोटे दूध व्यावसायियों को जोखिम वाले कारकों की जानकारी होनी चाहिए और उन्हें डेयरी व्यवसाय में जोखिम वाले कारकों से निपटना सीखना आना चाहिए।

डेयरी व्यवसाय में निम्नलिखित जोखिम कारक शामिल हैं :

- दूध और दूध के उत्पाद बहुत ही जल्दी नष्ट होने वाले होते हैं। विशेष रूप से भारत की गर्म जलवायु में तो दूध पांच घंटे के भीतर खराब हो जाता है।
- गर्म मौसम में, किसानों का पूर्व भंडारण की स्थिति, उपलब्ध सुविधाओं की कमी के कारण 30 प्रतिशत तक दूध खराब हो जाता है।
- स्वास्थ्य की कमी और डेयरी स्टॉक की स्वच्छता, पर्यावरण, कम गुणवत्ता वाला कच्चा दूध, और दूध निकालने की गलत प्रक्रिया आदि जैसी कुछ स्थितियां हैं, जिससे दूध में खाद्य जनित रोगजनकों की उपस्थिति होती है, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा जोखिम है।
- भंडारण और परिवहन के लिए उपयोग किए जाने वाले दूध या दूध उत्पादों के बर्तन या अन्य कंटेनर की सही सफाई नहीं होना।
- कार्य करने के लोगों और परिवहन सुविधाओं की कमी के कारण दूध उत्पाद को ग्राहक तक पहुंचाने में देरी होना।
- खुद के दूध उत्पादों को बेचने के लिए उचित बाजार न मिल पाने के कारण आमदनी कम होती

है और डेयरी व्यवसाय का विकास सीमित होता है।

• बाजार में उच्च प्रतिस्पर्धा होने से उत्पादों की कम मांग।

• फ्री–रेंज फीड और चारे की कमी और उच्च लागत की पूरक फीडिंग को वहन करने में असमर्थ होने से डेयरी पशुओं के प्रजनन और दूध उत्पादन व गुणवत्ता प्रभावित होती है।

इन परिस्थितियों से बचने के लिए उठाये जाने वाले कदम :

• खाद्य प्रसंस्करण और प्रबंधन प्रथाओं के बारे में प्रशिक्षण प्राप्त करना।

• दूध उत्पादों को बनाने और उन्हें सुरक्षित रखने के, मुख्य रूप से गर्म दिनों के दौरान उन्हें बेचने के लिए टूल्स और उपकरण, और रिफ्रीजन सिस्टम (प्रशीतन प्रणाली) स्थापित करना।

• अच्छी गुणवत्ता वाले दूध उत्पादों को सुनिश्चित कर हम अधिकतम विक्रय मूल्य प्राप्त कर सकते हैं।

• ग्राहकों की मांगों को जानने, और दूध और दूध के उत्पादों को तैयार करने एवं डिलीवरी देने के लिए नियमित रूप से उनसे संपर्क करना।

• डेयरी प्रोसेस में इस्तेमाल होने वाले टूल्स एवं उपकरणों की नियमितरूप से साफ–सफाई करना।

• डेयरी में उचित स्वच्छता बनाए रखकर हम अपने दूध और दूध के उत्पादों को सुरक्षित रख सकते हैं और खुद के डेयरी व्यवसाय के प्रति ग्राहकों का भरोसा कायम कर सकते हैं।

• डेयरी मवेशियों की पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए गुणवत्ता वाले हरे चारे के उत्पादन के लिए एक लागत प्रभावी प्रणाली का विकास करना।

गतिविधि : "मैं अपने डेयरी व्यवसाय में जोखिमों को कैसे कम कर सकता/सकती हूं?"

• ट्रेनर डेयरी व्यवसाय में जोखिम घटकों के बारे में समझायेंगे, कि अच्छे लाभ के साथ डेयरी व्यवसाय को चलाने में कौन से महत्वपूर्ण घटक हैं, और उनको घटकों से कैसे निपटा जा सकता है।

• प्रतिभागी अपनी–अपनी जोड़ियों में डेयरी व्यवसाय की व्यावहारिक कठिनाइयों के कारकों तथा अपने क्षेत्रों में दूध तथा दूध से बने उत्पादों को संभालने के बारे में चर्चा करेंगे। (वे फील्ड विजिट तथा अपनी व्यक्तिगत स्थिति के अनुभव के आधार पर डेयरी फार्म में अपने वाली समस्याओं के बारे में बता सकते हैं तथा समाधान भी सुझा सकते हैं)

• प्रत्येक जोड़ा समूह में अपनी–अपनी समझ तथा निष्कर्ष प्रस्तुत करेगा।

सत्र 15

डेयरी व्यवसाय के लिए रिकॉर्ड रखने और बजट बनाने का महत्व

रिकॉर्ड रखना और बजट बनाना डेयरी व्यवसाय का एक जरूरी घटक है। कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं होने के कारण, डेयरी मालिक को अपनी दैनिक कार्य के बारे में निर्णय लेते समय अपनी याददाश्त पर निर्भर रहना पड़ता है। डेयरी इकाई में उत्पादन और वित्तीय लेनदेन जैसे कई उपयोगी रिकॉर्ड होते हैं। व्यवसाय की प्रगति को ट्रैक करने के लिए कुछ उपयोगी रिकॉर्ड बनाए रखना बहुत जरूरी है। पैसा उधार लेते समय, सरकारी ऋण और कर रिटर्न करते हुए डेयरी व्यवसाय के सटीक तथ्यों और आंकड़ों का होना भी महत्वपूर्ण है। डेयरी फार्मिंग के लिए रिकॉर्ड और बजट बनाए रखने के

प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं :

- फीडिंग (चारा) लागत और पशु उत्पाद आउटपुट से होने वाले लाभों का विश्लेषण करने में मदद मिलती है। इसलिए इष्टतम उत्पादन के लिए आर्थिक फीडिंग रणनीति तैयार करने में मदद मिलती है।
- पशुओं में आमतौर पर होने वाली बीमारियों का पता लगाने में मदद मिलती है और इस तरह समय पर एहतियाती उपाय जैसे टीकाकरण, कीड़ामुक्ति (डीवर्मिंग) आदि अमल में लाने में मदद मिलती।
- पशु को खरीदने और बेचने के लिए सही कीमतें तय करने में मदद मिलती है।
- पशुओं की बेहतर देखरेख पर्यवेक्षण और प्रबंधन में मदद मिलती है।
- डेयरी फार्म की आमदनी और खर्च (आर्थिक) का निर्धारण करने में मदद मिलती है।
- दूध उत्पादन की लागत का अनुमान लगाने में मदद मिलती है।
- विभिन्न वर्षों में पशुओं के प्रदर्शन की तुलना करने में मदद मिलती है जिससे कि प्रत्येक वर्ष लाभ/हानि की मात्रा निर्धारित की जा सके और फार्म के भविष्य के लक्ष्यों/निर्देशों को निर्धारित किया जा सके।

गतिविधि : मेरी डेयरी के लिए रिकॉर्ड रखना और बजट बनाना

- प्रशिक्षक डेयरी के लिए रिकॉर्ड बनाए रखने और बजट बनाने के महत्व को समझाएगा।।
- प्रतिभागी जोड़े में बजट बनाने और रिकॉर्ड्स रखने जैसे कि कैश बुक, बिजनेस प्लान आदि को याद करेंगे और चर्चा करेंगे, जो उन्होंने LEAP तथा FEST प्रशिक्षण के दौरान सीखे हैं।।
- प्रत्येक जोड़ा अपनी समझ को समूह में प्रस्तुत करेगा।

बजट बनाना

हम एक शुरूआती और कामकाजी बजट बनाएंगे

चक्र 1: शुरूआती बजट बनाना

गतिविधि: मुझे किन वस्तुओं की जरूरत होगी?

प्रतिभागी उन वस्तुओं की सूची बनाएंगे जिनकी उन्हें अपना दूध का व्यवसाय शुरू करने के लिए जरूरत होगी।

आइए एक उदाहरण लेते हैं।

रोहिणी गाय के दूध का व्यवसाय शुरू करना चाहती हैं। उन्होंने अपनी सूची में निम्नलिखित वस्तुओं को शामिल किया

1. गाय को बांधने के लिए एक छप्पर 60 वर्ग फीट
2. एक दुधारू गाय और बछिया
3. 2 दूध रखने के बरतन
4. अलग–अलग नाप के दूध को नापने के बरतन
5. गाय को चारा और पानी के लिए एक बड़ी टंकी

गतिविधि : प्रत्येक वस्तु के लिए मुझे कितने धन की आवश्यकता होगी

प्रतिभागी अपनी सूची में दर्ज प्रत्येक वस्तु के सामने उसका अनुमानित दाम लिखेंगे। प्रतिभागी इस संभावना पर भी विचार करें कि कौनसी सामग्री उन्हें बिना दाम चुकाए या रियायती दाम पर मिल सकती है।

रोहिणी ने विभिन्न वस्तुओं के लिए दाम इस प्रकार लिखे

1. गाय को बांधने के लिए एक छप्पर 60 वर्ग फीट – रुपए 7,000
2. एक दुधारू गाय और बछिया – रुपए 30,000 – देसी गाय
3. 2 दूध रखने के बरतन – रुपए 1,000
4. अलग–अलग नाप के दूध को नापने के बरतन – रुपए 500
5. गाय को चारा और पानी के लिए एक बड़ी टंकी – रुपए 500
6. गाय का बीमा – रुपए 1,000 कुल लागत के 5 प्रतिशत की दर से कुल लागत – रुपए 40,000

रोहिणी एक माइक्रो फाइनेंस संस्था की ग्राहक हैं और वे उनसे ऋण लेंगी।

चक्र 2: अपने छोटे व्यवसाय के लिए कामकाजी बजट बनाना

एक कामकाजी बजट बनाने के दौरान ध्यान में रखने की बातें:

- आपको गाय या भैंस से कितना दूध मिलने की संभावना है
- आप दूध को किस दाम पर बेच सकती हैं और प्रतिदिन उससे आपको कितनी आमदनी होने की उम्मीद है
- आपके स्थाई मासिक खर्चे क्या–क्या होंगे। जैसे – बिजली का बिल, ऋण के पुनःभुगतान की किश्त, फोन का खर्च, पशु के टीकाकरण का सालाना खर्च, कृत्रिम गर्भाधान का खर्च आदि
- अनियमित खर्च क्या–क्या होंगे? जैसे गाय–भैंस के लिए हरा चारा, सूखा चारा, ठोस आहार आदि, परिवहन की यदि कोई आवश्यकता हो तो उसकी लागत आदि। आपको आपातकालीन स्थितियों के लिए भी कुछ राशि अलग से रखनी होगी।

ध्यान रखने की कुछ और बातें

**दुधारू समय और बिना दूध का समय

पशु	औसत दुधारू समय	औसत बिना दूध का समय
भैंस	280 दिन	110 दिन
देसी गाय	260 दिन	130 दिन
संकर नस्ल की गाय	300 दिन	90 दिन

**दूध उत्पादन

पशु	प्रतिदिन औसत दूध उत्पादन
भैंस	10 लीटर
देसी गाय	7 लीटर
संकर नस्ल की गाय	12 लीटर

**पशुओं के लिए चारे के दाम

पशुओं के लिए चारा	औसत मूल्य प्रति किलो
सूखा चारा	रुपए 4
हरा चारा	रुपए 2
ठोस आहार	रुपए 20

गतिविधि 'मैं विचार करूंगी'

- प्रशिक्षक प्रत्येक प्रतिभागी को एक–एक कागज का पुर्जा दे देंगे
- प्रतिभागी दो–दो के जोड़े में संभावित स्थाई और अनियमित खर्चों के बारे में चर्चा कर उन पर आने वाली लागत को इस पुर्जे पर एक तालिका में दो वर्गों में लिखती जाएंगी
- प्रतिभागी पशुओं के दुधारू और बिना दूध के समय और चारे की लागत आदि पहलुओं पर भी विचार करेंगे
- प्रत्येक प्रतिभागी उन्होंने किन पहलुओं पर विचार किया इसे बड़े समूह के सामने प्रस्तुत करेंगी। प्रशिक्षक तथा अन्य प्रतिभागी प्रत्येक प्रस्तुति पर अपने विचार व्यक्त करेंगे।

आइए रोहिणी के उदाहरण पर विचार करते हैं

रोहिणी ने जून माह में अपने व्यवसाय में होने वाले स्थाई और अनियमित लागतों का अनुमान कुछ इस तरह दर्ज किया

स्थायी लागत	रुपए	परिवर्तनशील लागत	रुपए
बिजली	300	एक गाय के लिए हरा चारा	900
ऋण की किश्त का भुगतान	600	सूखा चारा	220
फोन का खर्च	150	गाढ़ा चारा	1800
टीकाकरण का खर्च	150	ग्राहकों को दूध पहुंचाने के लिए परिवहन का खर्च	0
कुल	**1,200**	**कुल**	**2,920**
इस प्रकार रोहिणी को अपना व्यवसाय चलाने के लिए प्रतिमाह रुपए 1,200+2,920 को जोड़ कर 4,120 रुपए की आवश्यकता होगी।			

गतिविधि : 'मेरी मासिक बिक्री'

- प्रशिक्षक सभी प्रतिभागियों को एक–एक कागज का टुकड़ा वितरित कर देंगे
- प्रतिभागी अपने पहले वाले जोड़े में फिर से बैठ कर अपने व्यवसाय में दूध की मासिक बिक्री का आकलन करेंगी
- प्रत्येक प्रतिभागी अपनी मासिक बिक्री का अनुमान प्रस्तुत करेंगी
- प्रशिक्षक कोई गलती होने पर उसकी ओर ध्यान दिलाते हुए सत्र का समेकन करेंगी

आइए रोहिणी के आकलन पर विचार करते हैं। उनका अनुमान था कि उन्हें प्रतिदिन गाय से 8 लीटर दूध की प्राप्ति होगी।

प्रतिदिन दूध का उत्पादन	प्रतिकिलो दूध की बिक्री का दाम	एक दिन की आय	महीन में दिन	एक माह की कुल आमदनी
8 लीटर	रुपए 30	रुपए 240	30	रुपए 7,200

रोहिणी का छह माह का पूर्वानुमानित बजट इस प्रकार है

पूर्वानुमान	**जनवरी**	**फरवरी**	**मार्च**	**अप्रैल**	**मई**	**जून**
अनुमानित बिक्री	248 लीटर	224 लीटर	248 लीटर	240 लीटर	248 लीटर	240 लीटर

माह	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	कुल
आय							
बिक्री से आय	7,440	6,720	7,440	7,200	7,440	7,200	43,440
कुल आमदनी	7,440	6,720	7,440	7,200	7,440	7,200	43,440
स्थाई लागतें	1,200	1,200	1,200	1,200	1,200	1,200	7,200
अनियमित खर्चे							
बीमारियों से बचाव के लिए बचत	500	500	500	500	500	500	3000
कुल खर्च	4,620	4,620	4,620	4,620	4,620	4,620	27,720
शेष	2,820	2,100	2,820	2,580	2,820	2,580	15,720
शेष राशि आगे जुड़ कर	2,820	4,920	7,740	10,320	13,140	15,720	

गतिविधि : सारे पहलुओं का समेकित हिसाब

स्थाई और परिवर्तनशील लागतों और मासिक बिक्री के अनुमान को एक साथ रख कर एक कामकाजी बजट बनाया जा सकता है।

- प्रशिक्षक कामकाजी बजट का प्रारूप सभी प्रतिभागियों में वितरित कर देंगे
- प्रत्येक प्रतिभागी अपना बजट बनाएंगी और आवश्यकता होने पर वे इसमें अन्य प्रतिभागियों की सहायता ले सकती हैं।
- प्रत्येक प्रतिभागी अपना बजट समूह के सामने प्रस्तुत करेंगी। प्रशिक्षक अपनी ओर से कोई बात जोड़नी हो ता उसे जोड़ते हुए सत्र का समेकन करेंगे।

सत्र 16

व्यवसाय योजना बनाना

आधारभूत उद्यमिता और कौशल प्रशिक्षण (फेस्ट FEST) के दौरान प्रतिभागी छोटे व्यवसाय या लघु उद्यम के लिए व्यवसाय योजना बनाना पहले ही समझ चुके हैं। यहां वे खासतौर से 'दूध उत्पादन और बिक्री' के लिए व्यवसाय योजना बनाएंगे।

आइए रोहिणी की व्यवसाय योजना को देखते हैं

व्यवसाय योजना		
1	व्यवसायी महिला का नाम	रोहिणी
2	व्यवसाय का नाम और प्रकार	रोहिणी दूध उत्पादन और बिक्री
3	पता	अंएलापालि, पाटनागढ़,बलांगीर, ओड़िशा
4	(अ) प्रतिमाह बिक्री	रुपए 7,200
5	प्रतिमाह निश्चत लागतों जैसे किराया, बिजली का बिल आदि के अलावा प्रतिमाह होने वाले (ब) अन्य खर्च	रुपए 2,920
6	बिक्री में से अन्य खर्च घटाने पर कुल (अ–ब)	रुपए 4,280
7	निश्चित लागत ... (द) प्रतिमाह	रुपए 1,200
8	मुनाफा ... प्रतिमाह (अ–ब–द)	रुपए 3,080
9	ऋण की आवश्यकता	रुपए 40,000
10	ब्याज का खर्च ... (य) प्रतिमाह	रुपए 450
11	ब्याज के बाद लाभ (र) प्रतिमाह	रुपए 2,630

गतिविधि : 'मेरी व्यवसाय योजना'

- प्रशिक्षक प्रत्येक प्रतिभागी को व्यवसाय योजना का एक–एक प्रारूप वितरित कर देंगे
- प्रत्येक प्रतिभागी अपनी व्यवसाय योजना बनाएंगी। वे चाहें तो अन्य प्रतिभागियों से मदद ले सकती हैं
- प्रत्येक प्रतिभागी समूह के समक्ष अपनी व्यवसाय योजना प्रस्तुत करेंगी
- प्रशिक्षक उनकी योजना पर अपनी बात रखते हुए सत्र का समापन करेंगे

सत्र 17

प्रशिक्षण का समापन

- प्रशिक्षक प्रतिभागियों को प्रशिक्षण की पूरी प्रशिक्षण अवधि के दौरान उनका जो अनुभव रहा उसे साझा करने के लिए कहेंगे।

- प्रशिक्षक प्रशिक्षण पर अपनी समापन टिप्पणी देंगे और सभी प्रतिभागियों को उनकी व्यवसाय के सफलता के लिए शुभकामनाएं देंगे।

प्रशिक्षण के लिए आवश्यक सामग्री

- एक बोर्ड और चॉक
- पूरे प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों के इस्तेमाल के लिए कॉपी । फील्ड में जाने की तैयारी के दौरान प्रश्न लिखने के लिए भी इसका उपयोग करेंगी।
- आवश्यक फॉर्म की प्रतियां

HUMANA
PEOPLE TO PEOPLE INDIA

111/9-Z, Kishangarh, Vasant Kunj, New Delhi-110070
Telephone & Fax: 011- 47462222
E-mail: info@humana-india.org Website: www.humana-india.org

Registered under Section 25 of the Companies Act, 1956. CIN. : U85320DL1998NPL093972
Registration No. 55-93972; FCRA Registration No. 231660194
Tax exemption under Section 80 G of the Income Tax Act, 1961

www.facebook.com/humana.india
www.twitter.com/Humana_India
www.instagram.com/humanaindia/
www.youtube.com/user/HumanaPeopleIndia
www.linkedin.com/company/humana-people-to-people-india/